**'वाह वाह वर्ष'**

# कर्मयोगी सप्ताह

**12.01.2013**

1. **स्वमान** – मैं ब्रह्मा बाप समान कर्मयोगी हूँ।

- कर्मयोगी ही बापदादा की सभी श्रीमत का सहज और स्वतः पालन कर सकते हैं।
- कर्मयोगी का हर सेकण्ड और हर संकल्प सफल होता है।
- कर्मयोगी सदा स्वमान की सीट पर सेट रहते हैं इसलिये सभी शक्तियाँ उनका ऑर्डर मानती हैं।
- कर्मयोगी साधारण नहीं वरन् तीव्र पुरुषार्थी होते हैं।
- कर्मयोगी का मन सदा ही मंसा सेवा, श्रेष्ठ चिंतन एवं योगाभ्यास में बिजी रहता है इसलिये वे माया से मुक्त रहते हैं।

तो आओ, जैसे साकार बाबा ने कर्मयोगी का इग्जैम्पल बनकर दिखाया, वैसे हम भी उन्हें कॉपी कर बाप समान कर्मयोगी बनें।

2. **योगाभ्यास** –

– `कर्मयोगी अर्थात् सदा बाप के साथ रहते हुए हर कार्य करने वाले। चाहे लौकिक कर्म कर रहे हों या अलौकिक - कोई भी कर्म करते आलमाइटी अथॉर्टी बाप को अपना साथी अर्थात् फ्रैण्ड बनाकर रखो।`

– `अपनी निराकारी स्थिति में स्थित हो इस साकार शरीर का आधार लेकर कर्मक्षेत्र पर कर्मयोगी बनकर कर्म करना - यही है बाप समान स्टेज।` - **शिव भगवानुवाच**

3. **धारणा – प्रतिदिन मन की दिनचर्या बनाना, मन को बिजी रखना**

- `बापदादा ने पहले भी इशारा दिया है कि अपने मन को सदा बिजी रखो चाहे मन्सा सेवा में, चाहे वाचा से, चाहे मनन शक्ति में बिजी रखो।`
- `रोज अमृतवेले जैसे अपने तन की दिनचर्या बनाते हो, वैसे ही अपने मन की भी दिनचर्या बनाओ।`
- `अपने मन को बिजी रखने का अपने आप प्रोग्राम बनाओ। मन के बिजी रहने में बिजनेसमैन नम्बरवन बनो।` - **बापदादा**

4. **स्वचिंतन** –

- तीव्र पुरुषार्थी किसे कहेंगे ?
- कौन सी बातें मुझे तीव्र पुरुषार्थी नहीं बनने देतीं ?
- पुरुषार्थी से तीव्र पुरुषार्थी बनने के लिए मुझे क्या करना होगा ?,

5. **तपस्वियों प्रति** – प्रिय तपस्वियों ! प्यारे ब्रह्मा बाबा नंबर वन इसलिये बने क्योंकि उन्होंने शिव बाबा की हर श्रीमत को एक्यूरेट पालन किया। बाबा जब हमसे पूछते हैं कि कौन पूर्णरुपेण श्रीमत् पर चलने वाले हैं तो बहुत कम हाथ उठते हैं। विचारणीय बात है कि कौन हमें मुक्ति-जीवनमुक्ति दे सकता है ? कौन हमारा कल्याण वा उद्धार कर सकता है ? ? कौन हमारी सर्व मनोकामनाओं को पूर्ण कर सकता है ? ? ? जब हमें यह पता है कि एक बाबा की श्रीमत से ही यह सब संभव है तो हम क्यों अब तक मनमत व परमत की बैसाखी थामे हुए हैं...!!! बाबा की पहली और मुख्य श्रीमत है - **'निरंतर मेरी याद में रहो।'** आयें, कर्मयोगी बनकर बाबा की इस श्रीमत का पालन करते हुए बाप समान बनने की अपनी मंजिल की ओर तीव्रता से आगे बढ़े।